

161

अक्रिय उपस्थिति। कर्मिणी अपने  
 प्राण को चलाता ही चाहते हैं (होते)  
 अपने प्राण को गीत प्रकृत का रिया  
 है। अतः प्राण अन्तरात् कर्मिणी  
 के प्रकृत में खोजि लिया जाता है  
 प्रकृति प्रकृत शुद्ध हो जाती प्रकृत  
 कर्मिणी

Next process

